SUN PAGE (1-2) 8 SEP.qxd 7/9/2024 7:52 PM Page 1

उत्तर भारत का सम्पूर्ण अखबार
पढ़ कर देखें
अजीत समाचार
अधिक जानकारी तथा समाचार पत्र बुक करवाने के लिए सम्पर्क करें :-
एजैंसी मैनेजर
अजीत समाचार भवन, नेहरू गार्डन रोड, जालन्धर।
फोन : 0181-5086376, 5086379, 5088112
फैक्स : 0181-5086376, 5063104

रविवारीय परिशिष्ट
अजीत समाचार
AJIT SAMACHAR रविवार, 8 सितम्बर, 2024

अजीत समाचार
में ईयर पैनल
कम खर्च में अधिक प्रचार
बुकिंग के लिए सम्पर्क करें :-
विज्ञापन मैनेजर
अजीत समाचार भवन, नेहरू गार्डन रोड, जालन्धर।
फोन : 0181-2242049, 5086387 फैक्स : 5008882
ईमेल : news@ajitpublications.com

कनाडा की जन्नत है किलोना शहर

सुन्दर झीलों, बागों तथा बड़े होटलों का भव्य मर्मस्पशी शहर है किलोना। यहां पंजाबियों का बहुत बड़ा कृषि तथा बागान का बहुत बड़ा कारोबार है। इस शहर को देखने के लिए मन बनाया गया। परिवार सहित हम दो कारों में लगभग ढेड दिन में एडमिंटन से किलोना पहुंचे। एक रात हम एक भव्य नगर गोल्डन में ठहरे। यह सुन्दर कस्बा भी देखने योग है। प्रत्येक आधुनिक सुविधाओं से लबालब। किलोना को जाते समय रास्ते में कई खूबसूरत शहर और भी आते हैं। जैसे खेल स्टोक, वोरनर तथा नेलशन इत्यादि यहां शहरों को अलंकारित करती कुदरत तथा मनुष्य इसको संवार कर, लैंड स्केपिंग करके, आधुनिक सुविधाएं देकर अद्भुत शैली- शिल्प देकर, देखने योग्य, मर्मस्पशी प्रतीक विम्ब सजाकर भव्य दृश्य कीर्तिमान स्थापित कर देता है, जिसे जन्नत कहते हैं। इसी वजह से इन्होंने अपने प्रयत्न से कहीं-कहीं अपना आसमान ऊंचा उठाकर इंसान का सिर ऊंचा किया है।

यहां की भौतिक दैहिक तथा अन्य संसारिक आवश्यकताओं को मालामाल कर के सुखदायक तथा सुकून भरपूर बना दिया है। कनेडियन सरकारें सुविधाएं देने तथा पैसा कमाने में माहिर हैं। किलोना सच जन्नत ही है। शीशे की भांति चमकती चारों और स्वच्छता सफाई रूह को सुकून देती है। आंखों की खुराक होते हैं खूबसूरत दृश्य जो दिमाग को ताजगी सुकून तथा आध्यात्मिकता देते हैं। यहीं परिभाषा है जन्नत की।

उत्कर्ष झीलों का लहलहाता लहराता पानी जीवन के गीत गाता है। जिसकी तरंगे उमंगे, लपक, ललक की एक कहानी जन्नत को पीछे छोड़ती है। जैसे साज पर कोई कलाकार तिरंगे छेड़ रहा हो। झीलों में तरह-तरह की शैली शिल्प, सजावट में तैरती नावों की भरमार। नांव नुमा मोटर साइकिल, हाथ चालक नांव, तेल तथा इलैट्रिक नांव भी हैं। बहुत बड़ी झील में किश्तियां, क्रूज (छोटे शिप), चारों ओर ऊंची इमारते, भव्य घर, अल्प पहाडियां सब मिलकर आंखों के माध्यम से दिमाग को भर देती है।

यह क्षेत्र वाईन उद्योग के लिए दुनियां भर में प्रसिद्ध है। यहां बागों की संख्या बहुत है। किलोना ब्रिटिश कोलंबिया के दक्षिण भाग में ओकानागन घाटी में स्थित हैं ऊपर से दाईं ओर नाकस मांऊटेन पार्क तथा डाऊन टाऊन (शहर की दीर्घ मार्किट), बीच ओकानागन झील की चोटियां, मिशन हिल वाईनरी, दीर्घ टेल टावर, रोटरी बीच पार्क, उच्च स्तर की विश्व प्रसिद्ध यूनिवर्सिटी, विश्वस्तर का शिक्षक (प्रशिक्षण) अस्पताल, प्रांत का सबसे बड़ा व्यापारिक स्कूल, अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डा, फिल्म उद्योग तथा महान खिलाड़ियों का स्थान। ओलंम्पिक में खिलाड़ी स्थान रखते हैं।

किलोना प्रांत का तीसरा सबसे बड़ा महानगरी क्षेत्र तथा बैनकूवर तथा विकटोरिया के बाद इसका नाम आता है। जबकि कुल मिलाकर कनाडा का 7वां सबसे बड़ा शहर है। यहां ही लिओन एव्यून्यू में 42 मंजिलों का टावर भी है। जो शहर की दूरी दृष्टि का आकर्षक करता है। सबसे लम्बी प्राचीन झील ओकानागन जोकि लगभग 84 मील लम्बी तथा 5 किलोमीटर चौड़ी है। इस झील के साथ-साथ शहर भव्य घर तथा उद्योग क्षेत्र हैं। इसको बेस्ट बैंक तथा वेस्ट साईड भी कहा जाता है। उत्तर में लेक कंट्री तथा वरनर शहर है। दक्षिण तथा पश्चिम में पीचलैंड ओर दक्षिण में समर लैंड तथा पेंटीकटर भी शामिल है।

झील के ऊपर तीन लाईन तथा पांच लाईन बाले खूबसूरत ब्रिज जन्नत का परिणाम। जो शहर की खूबसूरती को चार चांद लगाते हैं। झील के आखिरी छोर पर एक बड़ी पहाड़ी को काटकर नीचे से ऊपर एक, दो, तीन बस्तियां बनाई गई हैं। जो झील के किनारे से ऊपर को बनी हुई हैं। जो दृश्यावली में खूबसूरती पैदा करती हैं। समस्त दृश्य रूह को छूने वाले हैं। इन बस्तियों में पंजाब तथा भारतीय लोग भी रहते हैं। इन बस्तियों को अमूमन होटल के रूप में प्रयोग करते हैं। यहां सभी प्रकार की भौतिक सुविधाएं हैं।

बलविन्द्र 'बालम'

किलोना में पंजाबी सिक्खों के अनेक बाग तथा बहुत मूल्य घर हैं। इस स्थान में पंजाबियों की तीसरी तथा चौथी पीढ़ी रह रही है। आज कल इन्होंने अलग ही अस्तित्व तथा प्रभुत्व स्थापित

◀◀ शेष पृष्ठ II पर ▶▶

आज भी साक्षरता से कोसों दूर हैं राष्ट्र के होनहार !

आज देश को 21वीं शताब्दी में ले जाने का सपना सभी देख रहे है लेकिन यह देश के उन गरीब बच्चों का दुर्भाग्य ही माना जायेगा आज भी शिक्षा से दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं है। देश में प्रतिवर्ष राष्ट्रीय साक्षरता मिशन का ढिंढोरा तो अवश्य पीटा जाता है, लेकिन राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मात्र दिवास्वप्न ही बन कर रह गया है। संविधान के अनुच्छेद 45 के अंतर्गत 14 साल की उम्र के हर बच्चे को मुफ्त शिक्षा (प्राथमिक) मुहैया कराने का प्रावधान है लेकिन आजादी के 76 वर्ष बाद भी हम उस मिशन को पूरा करने में पूरी तरह से विफल हुए है। देश में 6 करोड़ बच्चे ऐसे है, जिन्होंने दो कमाऊ हाथ के रूप में जन्म लिया है और बाल मज़दूर के रूप में कठोर परिश्रम कर स्वयं का व परिवार का पेट भरने को मजबूर हैं। इस सच्चाई से मुंह नहीं मोड़ सकते हैं कि गरीब परिवारों से

राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर विशेष

का लक्ष्य पूर्व में 1960 तक रखा गया था लेकिन कुछ निहित स्वार्थी के कारण यह देश की गंदी राजनीति के दकियानूसी तौर-तरीके में फंस कर रह गई। मुनिवादी शिक्षा पर विश्व बैंक व केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारें करोड़ो रुपये खर्च करने के बावजूद संवैधानिक मौलिक अधिकार को सफल बनाने के उद्देश्य से बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाती हैं लेकिन प्रशासनिक अव्यवस्था के चलते ये बीच में ही चरमरा कर दम तोड़ जाती है। गरीबों के बच्चे फिर हाशिए पर ही रह जाते है। राष्ट्रीय अध्यापक परिषद् के अनुसार देश में लाखों शिक्षक है उसके बावजूद भी ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों के ताले तक नहीं खुलते है और तो और शिक्षकों की भारी भरकम जमात में से हजारों शिक्षक ऐसे भी हैं जिन्हें क्या

शिक्षा आज भी उतनी ही दूर है जितनी कि आजादी से पूर्व थी। अगर कोई 2-3 कक्षा पढ़कर अपना नाम लिखने तक सीमित भी हो गया तो सरकारी आंकड़ों में फर्जी तौर पर उसे शिक्षित मान लिया जाता है। मगर इस सच को तो वही जानते हैं जो सही मायने में शिक्षा का अर्थ जानते है। आज देश की जनता के सम्मुख भुखमरी, गरीबी य बीमारियां व गरीब अमीर जैसे भेदभाव मुंहवाये खड़े है। ऐसी स्थिति में हम साक्षरता का लक्ष्य कैसे पूरा कर पायेंगे। ये शिक्षाविदों व केन्द्र राज्य सरकारों के लिए भी चुनौति है।

चेतन चौहान

यह देश का दुर्भाग्य ही है कि यहां की दोहरी शिक्षा नीति की वजह से सबसे ज्यादा नुकसान शिक्षा जगत को हुआ है, जिसका खामियाजा देश के विद्यार्थी भुगत रहे हैं। मुफ्त प्राथमिक शिक्षा देने पढ़ाएं कैसे पढ़ाएं तक का भी ज्ञान नहीं है। इसके पीछे भी हकीकत तो यह भी सामने है कि अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संरचना के दौरान प्रशिक्षित किये जाने वाले 45 प्रतिशत स्कूली शिक्षकों को अपनी सेवा अवधि के बीच में कोई ठोस प्रशिक्षण तक नहीं दिया जाता है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की रिपोर्ट के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों में 50 प्रतिशत विद्यार्थी अपनी पढ़ाई पूरी इसलिए नहीं कर पाते है क्योंकि विद्यार्थियों को पढाने के लिए शिक्षक नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो सबसे बुरा हाल शिक्षा-व्यवस्था का ही है जहां प्राथमिक विद्यालयों को मिलने वाला अनुदान इतना कम मिलता है कि उसमें से अधिकांश धनराशि शिक्षकों को वेतन

◀◀ शेष पृष्ठ II पर ▶▶

हमारे अनमोल रत्न

गुरजोत कौर
'अजीत प्रकाशन समूह'

आज दादा-दादी, नाना-नानी दिवस पर विशेष

ज़िंदगी में इन्सान के जन्म लेते ही रिश्ते उससे जुड़ जाते हैं, रिश्तों की गरिमा, उनकी गहराई, उनकी अहमियत बड़े होते-होते और निभाते-निभाते समझ आती रहती है।

हमारी संस्कृति, हमारा सभ्याचार हमें अपने रिश्ते मां-बाप, मासी, भूआ, मामा आदि यह सूचि जोकि बहुत लम्बी है, के साथ शुरू से अपनी जड़ों की तरह जुड़ने और ज़िंदगी भर दु:ख-सुख में साथ देने की प्रक्रिया सिखाता है। सबसे महत्वपूर्ण रिश्ता मां-बाप का होता है। इन्सान बड़े होने तक माता-पिता रूपी वट-वृक्ष की छांव तले पलता है और ज़िंदगी चलती रहती है।

'मूल नालों ब्याज प्यारा' यह कहावत हम सभी सुनते आए हैं। इस कहावत का वास्तव में तब पता चलता है, जब जिस रिश्ते पर यह कहावत बनी है, उस रिश्ते में प्रवेश होते हैं। जी हां, हम बात कर रहे हैं दादा-दादी और नाना-नानी की।

आज जो हमारे माता-पिता, सास-ससुर हैं, वे समय के साथ दादा-दादी और नाना-नानी बन जाते हैं। इस रिश्ते की तरक्की की खुशी मां-बाप से ज्यादा दादा-दादी और नाना-नानी को होती है।

बच्चे से लेकर बड़े होने तक इन्सान का दादा-दादी और नाना-नानी के साथ अलग और अनोखा लगाव होता है। जो बच्चे संयुक्त परिवार की छत के नीचे बड़े होते हैं, उनकी शख्सियत पर बड़े होने तक दादा-दादी और नाना-नानी की शिक्षाओं का प्रभाव कुदरती रूप में पड़ता रहता है और इसी प्रभाव तले वे दुनिया को देखते हैं। भाव बच्चों की बुद्धि और मानसिकता के विकास पर दादा-दादी और नाना-नानी का सकारात्मक प्रभाव होता है।

यह रिश्ता खून और इतिहास का होता है। एक परिवार की परम्परा, उनकी संस्कृति की परवरिश से दादा-दादी और नाना-नानी बच्चों को अवगत करवाने का अहम काम करते हैं। उनकी ज़िंदगी के अनुभव, सूझ-बूझ, ज्ञान का भण्डार, जो बच्चों के साथ सांझा करते हैं, वह बच्चे के भविष्य के लिए हमेशा के लिए छाप छोड़ जाता है। जो प्यार, मेल-मिलाप और ध्यान दादा-दादी और नाना-नानी द्वारा बच्चों को मिलता है, उससे बच्चा सुरक्षित महसूस करता है।

आजकल ज्यादातर माएं भी नौकरी करती हैं, खासतौर पर बड़े शहरों में, जहां मां-बाप रोज़ी-रोटी कमाने में लगे हुए हैं। मां-बाप तनाव-मुक्त होकर तभी काम कर सकते हैं जब उनको पता हो कि पीछे बच्चा सुरक्षित हाथों में है। अकेले सहायकों के पास भी बच्चों को छोड़ना आसान नहीं होता। ऐसे घरों में दादी-नानी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण बन जाती है। मां-बाप से भी ज्यादा दादी और नानी बच्चों का ध्यान रखती हैं।

हमारा सभ्याचार, पुरातन चीज़ें, गांवों का जीवन आदि, इन सब बातों की जानकारी आजकल की पीढ़ी मां-बाप से नहीं, दादा-दादी या नाना-नानी से लेती है।

दादा-दादी, नाना-नानी वे हैं जो पिछले समय की पीढ़ी के होने के बावजूद भी अपने आधुनिक युग के पौत्र-पौत्री, नाती-नातिन के साथ आधुनिक बन जाते हैं। नई पीढ़ी द्वारा दिए जाते आधुनिक और नये सुझावों को अपनाते हैं। चाहे फैशन के साथ संबंधित हों, चाहे यंत्रों के साथ संबंधित हों।

वे अपने आप को इसलिए ढालते हैं ताकि वे अपनी नई सोच वाले पौत्र-पौत्री, नाती-नातिन से दूर नहीं होना चाहते और उनके साथ हमेशा घुल-मिल कर रहना चाहते हैं।

जो बच्चे दादा-दादी और नाना-नानी के साये में बड़े होते हैं, वे ज़िंदगी की चुनौतियों और अविश्वासों का इस लगाव के सहारे मुकाबला करना सीखते हैं। मां-बाप के अलावा जब बच्चों को भी ज़िंदगी के किसी मोड़ पर दिशा-निर्देश की ज़रूरत होती है, तो वे दादा-दादी और नाना-नानी के पास सुख और रहनुमाई के लिए पहुंचते हैं। वे अपनी ज़िंदगी के अलग अनुभवों के साथ बच्चों का मार्ग-दर्शन करते हैं और बच्चों में जागरूकता पैदा करते हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार जो बच्चे अपने दादा-दादी या नाना-नानी के करीब होते हैं, उनके भावनात्मक विचार ज्यादा अच्छे होते हैं, जिससे बच्चों के सामाजिक और अकादमिक परिणाम अच्छे होते हैं।

प्रतिदिन की कहानियां सुन कर, अनुभव सांझे करके दादा-दादी और नाना-नानी की प्रतिदिन की ज़िंदगी की कुर्बानियों, त्याग के बारे जान कर कि कैसे वे अपने ज़माने की पिछड़ी दुनिया में भी पैदल चल कर मंज़िल तक पहुंचे, यह सुन कर और अनुभव करके वे बच्चों के रोल माडल बन जाते हैं और सूझ-बूझ के स्तम्भ और सहारे का सूत्र बन जाते हैं।

क्योंकि वे अपने बच्चों की ज़िंदगी से वाकिफ़ होते हैं, इसलिए वे मां-बाप का स्वभाव, उनके प्रतिदिन का काम, उनके हालात मन में रख कर पौत्र-पौत्री, नाती-नातिन के साथ उसी के अनुसार व्यवहार करते हैं।

जो भूमिका दादा-दादी और नाना-नानी बच्चों की ज़िंदगी में

◀◀ शेष पृष्ठ II पर ▶▶